मध्यकाल में शहरीकरण की अवधारणा एवं उसके मूल तत्व–एक ऐतिहासिक अध्ययन

गिरजा शंकर पटेल
रिसर्च स्कॉलर, समाज विज्ञान अध्ययन शाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, (म.प्र.)
डॉ. गीता चौधरी
प्रोफेसर, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दार, (म.प्र.)

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यकाल में शहरीकरण की अवधारण एवं उसके मूल तत्व पर ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकाश डाला गया है। शहरीकरण तो प्राचीन काल से चली आ रही प्रक्रिया है। लेकिन मध्यकाल में शहरीकरण की जो अवधारणा विकसित हुई वह एक नये प्रतिमान हमारे सामने प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में शहरीकरण को परिभाषित करते हुए मध्यकाल में उसकी अवधारणा एवं उसके मूल तत्वों का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि शहरीकरण अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है।

शब्द कुंजीः मध्यकाल, शहरीकरण, अवधारणा, तत्व, ऐतिहासिक, विश्लेषण, हड़प्पा, मोहनजोदडों, सिवीटास, अधोसंरचनाएँ, जनसंख्या, अर्थव्यवस्था, शहरी क्रांति, इंग्लैंड, पारम्परिक

प्रस्तावना
भारत प्राचीन काल से ही गाँवों का देश रहा है। इसकी अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण थी और गाँवों में निवास करती थी। जब हम शहरीकरण के ऐतिहासिक पृष्ठ–भूमि पर प्रकाश डालते है तो यह पता चलता है कि भारत में नगरो का इतिहास पूरे विश्व में सबसे पुराना है। प्राचीन काल में हड़प्पा व मोहन जोदड़ो की नगरीय सभ्यता इस बात का प्रमाण है कि भारत ने ही पूरे विश्व को सुव्यवस्थित और नये दृष्टिकोण से जीने की कला सिखाया। अतः हम कह सकते है कि भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया प्राचीन काल से ही चली आ रही है लेकि न मध्यकाल का शहरी–करण एक नये आयाम के साथ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर हमारे सामने आया जिसने शहरीकरण की अवधारणा को एक नई उँचाई प्रदान करके उसकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया।

मध्यकाल में शहरीकरण की अवधारणा
मध्यकाल में शहरीकरण की अवधारणा एवं उसके मूल तत्व पर प्रकाश डालने से पूर्व हमें नगर/शहर की परिभाषा को भली–भाँति समझ लेना आवश्यक है। नगर शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द श्ब्ज्ल्श का हिन्दी रूपांतरण है। श्ब्ज्ल्श शब्द लैटिन के श्ब्टप्ज्न्श (सिवीटास) से बना है जिसका अर्थ है जिसका अर्थ है– "नागरिकता"। नगर की एक सर्वमान्य परिभाषा प्रस्तुत करना बड़ा जटिल कार्य है क्योंकि समाज शक्तियों के बीच नगर को परिभाषित करने में पर्याप्त मतभेद विद्यमान है नगर शब्द से अवधारणा, अमूर्तता, मूर्तता, कार्य, संस्कृति प्रारूप, वृद्धि एवं विकास जैसे पक्षों का बोध होता है। नगर के निवासी, उनके आवास, आवागमन, नगर में विद्यमान समस्त ऊपरी अधोसंरचनाएँ निर्मित एवं भंडारित वस्तुएँ, भोज्य–अभोज्य पदार्थ आदि और इन सबके कार्यात्मक एकीकरण के समग्र को नगर कहा जा सकता है।

अनेक विद्धानों ने जनसंख्या के आकार एवं घनत्व के आधार पर नगर को परिभाषित किया है। "शहरीकरण" ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक विशेष निर्धारित आकार के बडे समूह में एकत्रित होने की प्रवृत्ति रहती है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखा जाय तो नगर उसे कहेगें जहाँ समुदाय की अधिकतम शक्ति और संस्कृति का केंद्रीकरण होता है। नगर धर्म, व्यवसाय, न्याय और ज्ञान का महत्वपूर्ण केंद्र होता है।

कुछ इतिहासकार आविष्कार एवं परिवर्तन को नगरों क जन्म के लिए उत्तरदायी मानते है। वे कहते है कि जो स्थान विकसित या बडे हो जाते थे वे छोटे स्थानों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास करते थे। नगरों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभुत्व स्थापित करने की प्रक्रिया ने नगरों को जन्म दिया।

"शहरी इतिहास" मुख्य रूप से शहरीकरण का अध्ययन है। एक विशेष अवधि में शहरी केंद्र के विस्तार, उनका विकास और ह्रास जैसे कारणों का अध्ययन किया जाता है। यह प्राकृतिक पर्यावरण, अर्थव्यवस्था, राजनीतिक तंत्र, सामाजिक ताने–बाने और शहरों में रहने वाले लोगो के सोच–विचार का आयाम है।

शहरों में ऐसा समुदाय रहता है जो मुख्यतः वाणिज्य एवं उद्योग के कार्यो में संलग्न रहता है। हालांकि नगर में कुछ लोग कृषि से संबंधित कार्यो से जुड़े हो सकते है लेकिन नगर को परिभाषित करने के लिए इन गतिविधियों को शामिल नहीं कर सकते है। जहाँ गाँवों में किसानों की प्रधानता होती है वहीं शहर में शासनकर्ताओं, व्यापारियों, शिल्पियों, कलाकरों, धर्माधिकारियों का बोलबाला रहता है। शहरों का अस्तित्व बना रहे इसके लिए अधिशेष कृषि एवं शिल्प उद्योग पर जोर दिया गया है।

नगरीकरण एक प्रक्रिया है। यह जनसंख्या आंदोलन है। ग्रामीण समाज या कृषि समाज की कार्य–पद्धति है जो नगर की तरफ अग्रसर होती है, जहाँ विभिन्न प्रकार के निर्माण कार्य पनप रहे होते है क्योंकि नगरीकरण कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं है। जो प्रथम बार ही होती है बल्कि यह सतत चलने वाली प्रक्रिया है।

मध्यकालीन शहरीकरण के मूल–तत्व

मध्यकालीन शहरीकरण के मूल–तत्व हैं–

1. हल्की जलवायु
2. खाद्य सामग्री की उत्पत्ति
3. आक्रमणों से तुलनात्मक दृष्टि से मुक्ति
4. उपजाऊ भूमि
5. अनुकूल जलवायु
6. भूमि एवं जल प्राप्ति के साधन
7. शत्रुओं से दूरी
8. व्यापार की दृष्टि से स्वतंत्र क्षेत्र

मध्यकालीन नगरों की उत्पत्ति में राजनीतिक तत्व बहुत महत्वपूर्ण था। सुरक्षित स्थानों पर ही राजधानियाँ बनायी जाती थी। जिसके फलस्वरूप यहाँ प्रशासनिक केंद्र भी स्थापित हो जाता था और यहाँ पर पुलिस, राज्य अधिकारी और अन्य कर्मचारी निवास करने लगते थे। अतः इन लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अन्य लोग, सहायक एवं उपयोगी कार्यो को करने के लिए ऐसे स्थानों पर बसने लगे

आर्थिक तत्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। नगरों में आजीविका के अनेक साधन होते थे जिससे लोग बड़ी संख्या में नगरो की तरफ पलायन करने लगे।

नगरों के विकास में यातायात एवं परिवहन ने योगदान दिया। जहाँ भी यातायात अधिक था वही नगर बस जाते थे।

नगरों के विकास में ग्रामीण तत्वों में कृषि एवं कृषि के क्षेत्र में होने वाली क्रांति तथा इनके परिणाम स्वरूप होने वाले आविष्कार औद्योगिक क्रांति आदि प्रमुख रहे हैं।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि मध्यकाल का शहरीकरण किसी एक तत्व की देन नहीं है बल्कि इसमें अनेक तत्वों ने भूमिका अदा की है। जिसके फलस्वरूप मध्यकाल का शहरीकरण एक नये रूप में हमारे सामने आया।

मध्यकाल का शहरीकरण मुख्यतः मुसलमानों के भारत आगमन से प्रारंभ माना जा सकता है। प्रो. मोहम्मद हबीब ने "शहरी क्रांति" का सिद्धांत दिया। जिसमें उन्होने बताया कि जो निम्न वर्ग था उसे शहर के बाहर रखा जाता था। शहरों में उनका प्रवेश वर्जित था लेकिन जब भारत में मुस्लिम राज्य स्थापित हुआ तब इस निम्न वर्ग को सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई और वे नगरों में रहने लगे। इस प्रकार हम कह सकते है कि मध्यकालीन शहरीकरण ने एक ऐसे सामाजिक ढाँचे का निर्माण किया जिसमें उच्च वर्ग और निम्न वर्ग का भेदभाव नहीं था। बर्नियर का कहना है कि "दिल्ली में कोई मध्यवर्ती स्थिति नहीं है।"

मध्यकाल में ऐसे अनेकों शहरों का निर्माण हुआ जो आबादी में यूरोप और इंग्लैंड के समकालीन शहरों से भी अधिक थी लेकिन खास बात यह रही कि इतने विशाल शहरों के निर्माण ने भी पारम्परिक गाँवो के जीवन को नुकसान नहीं पहुँचाया।

यह स्पष्ट है कि किसी एक तत्व अथवा विशेष परिस्थिति के कारण अचानक कोई नगर नही बस जाता है। एक लम्बी प्रक्रिया है नगर बसने की या बनने की और कम से कम प्राचीन समय में नगरों का विकास शनैः शनैः हुआ है। विशेषतौर से विशेष शासन व्यवस्था के अंतर्गत राजा ने अपनी सुविधा, विलासिता अथवा अपना गौरव बढ़ाने हेतु इमारतों का निर्माण कराया अथवा अपनी राजधानी को वैभवशाली बनाने के लिए किसी स्थान को भव्यता प्रदान की। जैसे फतेहपुर सीकरी को अकबर ने दूसरी राजधानी बनाकर आकर्षण का केंद्र बनाया। दर्शनीय होने के नाते फतेहपुर सीकरी के चारो तरफ एक नगर बस गया। नगर का बसना और उसका विस्तार निश्चय ही राजतंत्र के चढ़ाव व उतार के साथ सीधा जुड़ा हुआ था। इसलिए राजतंत्र के शासनकाल में कुछ नगरों का विकास हुआ तो कुछ का पराभव भी। इस तरह राजतंत्र में नगरीकरण की प्रक्रिया एक राजनीतिक प्रक्रिया थी जबकि आज यह औधोगीकरण और आर्थिक विकास के साथ जुड़ी है। इस अर्थ में नगरीकरण निश्चय ही एक आर्थिक प्रक्रिया है। रामचंद्रन इस बात पर बल देते हुए देखते है कि राजतंत्र में शासनतंत्र व शासकों की नगरों को बसाने में रूचि थी, यह एक राजनीतिक प्रक्रिया के तहत किया जाता था। नगरीकरण आर्थिक प्रक्रिया का प्रतिफल है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मध्यकाल में जो शहरीकरण हुआ वह एक निश्चित प्रतिमानों पर आधारित था और इसने शहरीकरण के विभिन्न सकारात्मक पक्षों को उजागर किया। मध्यकाल में जो शहरीकरण की अवधारण रही उससे समाज के निम्न वर्ग और उच्च वर्ग के बीच की खाई समाप्त हो गयी। मध्यकाल का शहरीकरण पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव नही पड़ने दिया बल्कि पर्यावरण संरक्षण के लिए शासकों द्वारा अनेकों प्रकार के बाग लगवाये गये। बाबर ने तो ज्यामितिय विधि से बाग लगाने की परम्परा विकसित की। इस शहरीकरण ने गाँव के जीवन शैली को बचाये रखने में सफल रहा। मध्यकालीन शहरीकरण में किसी एक तत्व ने सहयोग नही किया बल्कि अनेक तत्वों ने मिलकर मध्यकालीन शहरीकरण को एक नई ऊँचाई प्रदान की। अतः ऐतिहासिक दृष्टि से मध्यकाल का शहरीकरण अन्य काल के शहरीकरण से अलग स्थान रखता है। जहाँ से हम वर्तमान शहरीकरण की प्रक्रिया में अनेक तत्वों को शामिल कर इसे नई ऊँचाई प्रदान कर सकते है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. Naqvi H.K., 1972, Urbanization and urban centers under the great Mughals, IIOAS, Simla.
2. Stein, Burton, 2010, A History of India, Wiley-Blackwell Publication.
3. आर. रामचन्द्रन, अरबनाइजेशन एण्ड अर्बन सिस्टम, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011
4. जैन, शशि, 2001, नगरीय समाजशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर दिल्ली।
5. बंगा, इंदु, 1991, सिटीज ऑफ इण्डिया, मनोहर पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
6. अनुराग, 2017, मध्यकालीन भारत में नगरों का विकास, स्वरूप एवं वर्गीकरण 1206–1707 ई.: एक अध्ययन, International journal of research in economics and social sciences, ISSN: 2249-7382
7. चंद्रा, सतीश, 2003, मध्यकालीन भारत (1526–1748 ई.) ओरिएन्ट ब्लेक स्वान पब्लिसर्स, नइ दिल्ली।
8. वर्मा, हरिश्चंद्र, 1983, मध्यकालीन भारत, भाग–1 (750–1540ई.) हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
9. वर्मा, हरिश्चंद्र, 1983, मध्यकालीन भारत भाग–2 (1540–1761 ई.) हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय,दिल्ली विश्वविद्यालय